मोबाइल चलाते हुए वाहन चलानाः

आधुनिक युग का सबसे 'स्मार्ट' मूर्खतापूर्ण साहस

आज का इंसान वाकई बहुत 'एडवांस' हो गया है। पहले लोग गाड़ी चलाते समय सड़क देखते थे, अब लोग गाड़ी चलाते समय स्क्रीन देखते हैं। यानी विकास की गाड़ी इतनी तेज दौड़ी कि अब सड़क पीछे छूट गई और मोबाइल आगे निकल गया। 'मल्टीटास्किंग' का नया कीर्तिमान आज का चालक कोई साधारण प्राणी नहीं है। वह एक साथ कई काम कर सकता है— गाड़ी चला सकता है, मोबाइल पर चैट कर सकता है, कॉल रिसीव कर सकता है, और साथ ही साथ अपने जीवन का रिस्क भी बढ़ा सकता है। यह एक नई प्रतिभा है, जिसे हम 'डिजिटल संतुलन कला' कह सकते हैं—जहाँ एक हाथ में स्टेयरिंग और दूसरे में मोबाइल, और संतुलन भगवान भरोसे। नोटिफिकेशनः आधुनिक युग का नया हॉर्न पहले लोग हॉर्न की आवाज सुनकर सतर्क होते थे, अब मोबाइल की 'टिंग' सुनकर चौंकने हो जाते हैं।

ट्रैफिक सिग्नल पर जैसे ही गाड़ी रुकती है, लोग तुरंत मोबाइल निकालते हैं— जैसे कोई जरूरी सरकारी आदेश आया हो। लाल बत्ती उनके लिए 'मोबाइल चेक करने का आधिकारिक समय' बन चुकी है।और जैसे ही हरी बत्ती होती है, पीछे से 10 गाड़ियाँ हॉर्न बजाती हैं, तब जाकर इन्हें याद आता है— 'अरे हाँ, हम सड़क पर भी हैं! व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर आज का ड्राइवर सिर्फ ड्राइवर नहीं, बल्कि 'व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी' का प्रोफेसर भी है। उसे हर मैसेज का तुरंत जवाब देना होता है—चाहे वो 'गुड मॉर्निंग' हो या Forward this to people' वाला संदेश।

ऐसा लगता है जैसे अगर उसने तुरंत रिप्लाई नहीं किया, तो पृथ्वी घूमना बंद कर देगी। 'बस एक सेकंड' का महान भ्रम मोबाइल इस्तेमाल करने वाले हर चालक का सबसे प्रिय वाक्य होता है—'बस एक सेकंड... यही 'एक सेकंड कभी-कभी जिंदगी और मौत के बीच की दूरी बन जाता है। लेकिन हमारे 'स्मार्ट' लोग इस एक सेकंड को इतना हल्का समझते हैं जैसे ये कोई फ्री डेटा हो, जिसका इस्तेमाल करना उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। सड़क या सोशल मीडिया? अब सड़कें सिर्फ चलने का स्थान नहीं रहीं,बल्कि सोशल मीडिया का एक्सटेंशन बन गई हैं। यहाँ लोग चलते-चलते स्टेटस अपडेट करते हैं—'Driving ??... Dont disturb!

विडंबना देखिए—वो खुद तो डिस्टर्ब हो रहे हैं, और साथ में पूरी ट्रैफिक को भी कर रहे हैं। दुर्घटनाः जब 'स्क्रद्बह्ल' आखिरी हो जाता है जब दुर्घटना होती है, तो सबसे पहले लोग गाड़ी नहीं, मोबाइल चेक करते हैं— 'स्क्रीन तो ठीक है ना? मानो शरीर बाद में ठीक हो जाएगा, लेकिन स्क्रीन पर खरोंच आ गई तो पूरी जिंदगी का दु:ख बन जाएगा। कई बार Last seen वास्तव में आखिरी बार देखा जाना बन जाता है—लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

कानून और चालाक नागरिक सरकार नियम बनाती है, जुर्माना बढ़ाती है, जागरूकता अभियान चलाती है—लेकिन हमारे नागरिक भी कम नहीं। वो मोबाइल को नीचे रखकर कानों में इयरफोन लगा लेते हैं, या गाड़ी को धीरे-धीरे चलाकर कॉल करते रहते हैं—मानो उन्होंने कानून को नहीं, बल्कि कानून ने उन्हें बेवकूफ बना दिया हो।

डिजिटल गुलामी का सच असल में समस्या मोबाइल नहीं है, समस्या हमारी आदत है। हम इतने आदी हो चुके हैं कि बिना मोबाइल के एक मिनट भी असहज महसूस करते हैं। सड़क पर भी हमें 'ऑफलाइन' रहना बर्दाश्त नहीं होता।हमने खुद को नोटिफिकेशन का गुलाम बना लिया है—जहाँ हर 'टिंग' पर हम ऐसे प्रतिक्रिया देते हैं जैसे किसी ने हमारा नाम पुकारा हो।

समाधानः व्यंग्य में छिपी गंभीरता अब अगर व्यंग्य छोड़कर सच की बात करें, तो समाधान बहुत सरल है— गाड़ी चलाते समय मोबाइल को दूर रखें जरूरी कॉल के लिए गाड़ी रोकें खुद की और दूसरों की जान को प्राथमिकता दें क्योंकि सड़क पर चलना कोई गेम नहीं है, जहाँ 'रीस्टार्ट' का ऑप्शन मिल जाए।

निष्कर्षः स्मार्ट बनो, समझदार भी बनो आज हम 'स्मार्टफोन' के युग में हैं, लेकिन जरूरत 'स्मार्ट इंसान' बनने की है। अगर मोबाइल हमारे जीवन को आसान बना रहा है, तो उसे हमारी जान के लिए खतरा नहीं बनने देना चाहिए।

याद रखिए—सड़क पर 'टाइपिंग...' नहीं, 'सोच-समझकर ड्राइविंग' जरूरी है। क्योंकि मोबाइल की बैटरी खत्म हो जाए तो चार्ज हो सकती है, लेकिन जिंदगी... वो एक बार डिस्चार्ज हो गई, तो फिर कभी 'रीचार्ज' नहीं होती।

मुकेश कुमार बिस्सा
जैसलमेर

प्रबल होती चिन्ताएं

▸ महेन्द्र तिवारी, ईमेलः mahendratone@gmail.com

होर्मुज की नाकेबंदी से टूटती अनगिनत उम्मीदें

होर्मुज जलडमरूमध्य दुनिया के नक्शे पर महज एक संकरी रेखा है, लेकिन इस रेखा के दोनों किनारों पर आज जो ताकतें आमने-सामने खड़ी हैं, उनकी टकराहट की गूँज पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था की नींव तक पहुँच रही है। होर्मुज नाकेबंदी का यह संकट केवल दो देशों के बीच के सैन्य टकराव की कहानी नहीं है। यह उस पूरी व्यवस्था के दरकने की कहानी है जिस पर पिछले कई दशकों से वैश्विक व्यापार की रफ्तार, ऊर्जा आपूर्ति की निरंतरता और करोड़ों लोगों की रोजी-रोटी टिकी हुई है।

इस संकट की पृष्ठभूमि फरवरी 2026 के अंत में बनी जब अमेरिका और उसके सहयोगी देशों ने ईरान पर सैन्य हमले किए। ईरान ने इसके जवाब में होर्मुज जलडमरूमध्य पर अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश की और वहाँ से गुजरने वाले जहाजों पर नियंत्रण की कोशिशें तेज कर दीं। यह वही जलमार्ग है जिससे सामान्य परिस्थितियों में विश्व के समुद्री तेल व्यापार का लगभग 20 प्रतिशत गुजरता है। इसके बाद पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में शांति वार्ताओं का एक लंबा दौर चला। सप्ताहों तक कूटनीतिक मेज पर बातचीत होती रही लेकिन जब ये वार्ताएँ बिना किसी नतीजे के समाप्त हो गईं तो 13 अप्रैल 2026 को भारतीय समयानुसार शाम लगभग 7 बजकर 30 मिनट पर अमेरिका ने ईरान के सभी प्रमुख बंदरगाहों पर समुद्री नाकेबंदी लागू कर दी। इस एक घोषणा ने पूरी दुनिया की आर्थिक नब्ज को झकझोर कर रख दिया।

नाकेबंदी को सीमित रखने की कोशिश की गई। अमेरिकी सैन्य कमान ने स्पष्ट किया कि यह केवल उन जहाजों पर लागू होगी जो ईरानी बंदरगाहों में प्रवेश करते हैं या वहाँ से बाहर निकलते हैं। खाड़ी के अन्य देशों के बीच आवागमन को बाधित नहीं किया जाएगा। उद्देश्य यह था कि ईरान की तेल निर्यात क्षमता को कुचला जाए लेकिन वैश्विक व्यापार पूरी तरह ठप न हो। किंतु यह सीमित रणनीति भी बाजारों को स्थिर नहीं रख सकी। जैसे ही नाकेबंदी की घोषणा हुई, कच्चे तेल की कीमत 100 डॉलर प्रति बैरल के पार चली गई और कुछ ही घंटों में यह 101 से 104 डॉलर प्रति बैरल के बीच पहुँच गई। यह केवल तत्काल बाजार प्रतिक्रिया नहीं थी बल्कि इसमें आने वाले महीनों की गहरी अनिश्चितता का डर भी शामिल था। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि यदि यह संकट लंबा खींचा तो तेल की कीमतें 150 डॉलर प्रति बैरल तक जा सकती हैं।

ईरान की जवाबी चालों ने समुद्री व्यापार को जड़ से हिला दिया। सैकड़ों जहाज खाड़ी के बाहर लंगर डाले प्रतीक्षा करते रहे। लाखों बैरल तेल समुद्र में ही अटका रहा। अनुमान है कि प्रतिदिन लगभग 20,00,000 बैरल ईरानी तेल की आपूर्ति इस नाकेबंदी से प्रभावित हो सकती है। यह आँकड़ा वैश्विक बाजार के लिए किसी गहरे घाव से कम नहीं है। जब इतनी बड़ी मात्रा में तेल आपूर्ति अचानक बाधित होती है तो उसकी प्रतिध्वनि केवल पेट्रोल पंपों पर नहीं बल्कि हर उस चीज की कीमत पर सुनाई देती है जिसे बनाने, उगाने या पहुँचाने में ऊर्जा की जरूरत होती है।

समुद्री बीमा दरों में तेज उछाल ने स्थिति को और जटिल बना दिया। जब जहाज संघर्ष क्षेत्र के पास से गुजरते हैं तो बीमा कंपनियाँ जोखिम के अनुपात में प्रीमियम बढ़ा देती हैं। इससे परिवहन की लागत बढ़ जाती है। जो जहाज वैकल्पिक मार्ग अपनाते हैं उन्हें अफ्रीका के केप ऑफ गुड होप का लंबा चक्कर लगाना पड़ता है जिससे यात्रा का समय और ईंधन खर्च दोनों बढ़ जाते हैं। यह बढ़ी हुई लागत अंततः उन देशों तक पहुँचती है जो इस तेल के खरीदार हैं और वहाँ के उपभोक्ताओं की जेब पर सीधा बोझ बनती है। इस तरह होर्मुज में खींची गई एक रेखा दिल्ली, बीजिंग, टोक्यो और यूरोप की रसोइयों तक अपना असर दिखाती है।

एशिया इस संकट का सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र है। चीन दुनिया का सबसे बड़ा कच्चे तेल का आयातक देश है और उसकी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से पूरा होता है। ऊर्जा महंगी होने पर उसकी विनिर्माण लागत बढ़ेगी, उत्पाद महंगे होंगे और वैश्विक बाजार में उसकी प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त कमजोर पड़ेगी। इसका असर उन देशों पर भी पड़ेगा जो चीनी वस्तुओं पर निर्भर हैं। भारत की स्थिति और भी अधिक नाजुक है। भारत अपनी कुल ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा खाड़ी देशों से आयात करता है। तेल महंगा होने का अर्थ है कि परिवहन लागत बढ़ेगी, बिजली उत्पादन महंगा होगा, उद्योगों की लागत बढ़ेगी और अंततः हर वस्तु की कीमत ऊपर जाएगी। हाल की रिपोर्टों में यह सामने आया है कि तेल कीमतों में आई इस उछाल के कारण भारतीय मुद्रा पर भी दबाव बढ़ा है जो आयात को और महंगा बना देता है।

इस संकट का एक ऐसा पहलू भी है जिस पर आम तौर पर कम ध्यान जाता है और वह है खाद्य सुरक्षा पर पड़ने वाला असर। आधुनिक कृषि ऊर्जा पर बहुत अधिक निर्भर है। खाद बनाने में प्राकृतिक गैस का बड़े पैमाने पर उपयोग होता है। जब ऊर्जा महंगी होती है तो खाद महंगी होती है, खेती की लागत बढ़ती है और अनाज के दाम चढ़ते हैं। 2026 के इस संघर्ष ने पहले ही तेल और गैस के साथ-साथ खाद आपूर्ति को भी प्रभावित किया है। संयुक्त राष्ट्र से जुड़े आकलनों में गंभीर चेतावनी दी गई है कि यदि यह संकट लंबे समय तक बना रहा तो करोड़ों लोग गरीबी में धकेले जा सकते हैं और वैश्विक खाद्य संकट उभर सकता है। यह चेतावनी उन देशों के लिए विशेष रूप से भयावह है जो पहले से ही खाद्य असुरक्षा से जूझ रहे हैं।

यूरोप की स्थिति भी चिंताजनक है। महद्वीप पहले से ही ऊर्जा संकट की मार झेल रहा है और इस नई घटना ने उसकी मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। यूरोपीय देशों की अर्थव्यवस्थाएँ जो अभी धीरे-धीरे पटरी पर लौट रही थीं, उन्हें एक और झटका लगा है। इस पूरे संकट के सामरिक आयाम भी कम जटिल नहीं हैं। ईरान ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि किसी सैन्य जहाज ने उसके प्रभाव क्षेत्र के समीप हस्तक्षेप किया तो उसे संघर्षविराम का उल्लंघन माना जाएगा और जवाबी कार्रवाई होगी। इसका मतलब यह है कि कोई भी छोटी सी घटना बड़े युद्ध की शुरुआत बन सकती है। इस क्षेत्र में 1980 के दशक में भी ईरान-इराक युद्ध के दौरान इसी जलमार्ग को लेकर भयंकर तनाव देखा गया था। लेकिन आज की परिस्थिति उस दौर से कहीं अधिक जटिल है क्योंकि आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था कहीं अधिक आपस में बुनी हुई है। एक जगह की आग दूसरी जगह पहुँचने में अब ज्यादा वक्त नहीं लगता।

अमेरिका की इस नाकेबंदी के पीछे केवल सैन्य उद्देश्य नहीं है। इसका मकसद ईरान को आर्थिक रूप से इतना दबाना है कि वह बातों की मेज पर वापस आने को मजबूर हो जाए। लेकिन इतिहास यह भी बताता है कि आर्थिक नाकेबंदी हमेशा वैसा असर नहीं करती जैसी उम्मीद होती है। कभी-कभी दबाव में आकर ईरान और अधिक कठोर रुख अपना लेते हैं। यदि ईरान ने भी ऐसा ही किया तो यह संकट और गहरा हो सकता है।

होर्मुज जलडमरूमध्य का यह संकट हमें एक बड़ी सच्चाई से रूबरू कराता है। आधुनिक दुनिया में ऊर्जा मार्गों का नियंत्रण केवल आर्थिक मामला नहीं है, यह सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत है। जो देश या शक्ति इन मार्गों पर काबिज होती है वह वैश्विक राजनीति की बिसात पर सबसे मजबूत मोहरा बन जाती है। अप्रैल 2026 की यह नाकेबंदी केवल एक कूटनीतिक चाल नहीं है। यह उस बड़े संघर्ष की एक कड़ी है जो ऊर्जा, भू-राजनीति और वैश्विक व्यवस्था के भविष्य को लेकर दशकों से चला आ रहा है। होर्मुज की यह आग आज चाहे जितनी सीमित लगे, इसकी तपिश दिल्ली से बीजिंग तक, लंदन से नैरोबी तक, हर जगह महसूस की जा रही है और यदि यह जल्द नहीं बुझी तो इसके धुएँ में न जाने कितनी अर्थव्यवस्थाएँ दम तोड़ देंगी।

संबंध से जुड़ना

आज हर प्राणी किसी ना किसी समाज से जुड़ा हुआ हैं । वह मजहब कोई भी हो सकता है पर उसके नियम क़ानून की पालना करना उसका नैतिक कर्तव्य बनता है। हम जिस समाज के अंग हैं उसके क़ायदे-क़ानून की अगर अवहेलना करेंगे तो सामाजिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाएगी। एक से दो होते हैं दोस्त,दो से चार होता है , परिवार और चार से चालीस समाज होता है।व्यक्ति का और समाज का एक सामाजिक रिश्ता होता है। आदिकाल के पश्चात सभ्यता के विकास से परिवार व समाज व्यवस्था का प्रादुर्भाव हुआ हैं । इसका मनुष्य की जीवनशैली पर प्रभाव पड़ा हैं । वह इसी के चलते मनुष्य

आज सामाजिक प्राणी कहलाता है। वह सम्बन्धों में जीता है। परिवार, मित्र, समाज, समूह आदि आधारभूत इकाईयां हैं। इनमें रहन परस्पर निर्भरता बढ़ने लगी है। एक दूसरे की मानो वह परछाईयां हैं । इसका मूल कारण पारस्परिक अपेक्षाएं है । हमें कुछ माने चाहत रहती है दूसरा महत्व की भावनाएं दे । यहीं से उत्कर्ष के साथ-साथ संघर्ष शुरू होता है । वह पारिवारिक व सामाजिक स्वस्थता के लिए आवश्यक परस्पर लेने का नहीं है, सदा देने की भावना पनपे। अपेक्षाएं आवश्यकताओं तक ही सीमित रहें। वह तब सम्बन्ध प्रेम में बदल जाता है। वह सेवा समर्पण बन जाता है। यहीं से सामाजिक सौहार्द का विस्तार और सामूहिक प्रगति का आधार होता है । एक व्यक्ति जन्म लेता हैं । वह जन्म के साथ संबंधों से जुड़ जाता हैं । वह नहीं जानता लेकिन लोग जान लेते हैं कि यह उसकी माता हैं, यह पिता हैं, यह उसका भाई हैं । अनेक संबंध जुड़ जाते है । समाज का मतलब है कि संबंधों की श्रृंखला । वह जब कोई साधु बनता हैं , उसके लिए कहा जाता हैं कि सब संबंधों से मुक्त हो गया । एक सामाजिक प्राणी कभी संबंधों से मुक्त नहीं हो सकता है । परिवार का संबंध हैं, पड़ैसी का संबंध हैं, गांव का संबंध हैं, समाज का संबंध हैं । संबंध में रहने वाला कभी संबंधातीत

जीवन जी नहीं सकता हैं । वह संबंधों के साथ जीता हैं । संबंधों में ये सारे चिंतन आते हैं । उन चिंतनों का एक वर्गीकरण भगवान् महावीर की वाणी में बहुत सुंदर मिलता हैं । दस प्रकार के धर्म बतायें गए हैं । ग्राम धर्म, नगर धर्म, राष्ट्र धर्म आदि ये सारे धर्म हैं । ये सारे मोक्ष के धर्म नहीं हैं । कुछ लोकोत्तर धर्म हैं । वह कुछ लौकिक धर्म हैं ।

वह इन सबको ठीक से समझें बिना समग्र जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती और एक व्यक्ति समग्रता का जीवन नहीं जी सकता हैं । एकांगी निरपेक्ष होता हैं। समाज में कोई भी निरपेक्ष जीवन नहीं जी सकता हैं । निरपेक्ष केवल अस्तित्व ही हो सकता हैं । व्यक्ति कभी निरपेक्ष नहीं हो सकता हैं । आत्मा निरपेक्ष हो सकती हैं किंतु कोई भी शरीरधारी निरपेक्ष नहीं हो सकता हैं । वह सापेक्ष होता हैं और सापेक्षता का जीवन जीता हैं । हम सब सापेक्ष हैं । आज की विकसित सामाजिक प्रणाली में मनुष्य समाज का एक अभिन्न अंग है इसलिए वह समाज-व्यवस्था के अलिखित नियमों से आबद्ध है। ताकि समाज का सुचारु रूप से प्रबंध होता रहे । मनुष्य की मनुष्यता अस्तव्यस्त होने से केवल उसको केवल व्यक्तिगत हानि ही नहीं होती बल्कि समाजिक शांति, सुव्यवस्था एवं प्रगति भी छिन्न भिन्न हो जाती है। क्योंकि व्यक्तियों का समाज समूह ही तो हैं । समाज और व्यक्ति का संबंध अविच्छिन्न है। दोनों अन्योन्याश्रित हैं। अतः आवश्यक है कि सुचारु रूप से सामाजिक व्यवस्था चलती रहे । सत्य, ईमानदारी, मिलनसरिता, करुणा, कर्तव्यनिष्ठा आदि जैसे चारित्रिक गुण हैं जो लोगों के दिल से प्रतिष्ठा दिलाते हैं । इन आधारभूत गुणों से रहित पद-प्रतिष्ठा दीखने में चमक की प्रतिष्ठा लग सकती है पर उसमें लोगों की दिल से निष्ठा नहीं होती है। अतः जीवन का असली धन लोगों के हृदय से निकला आदर है । जो हमारे जीवन मूल्यों के कारण हमारा सम्मान आदि - आदि हमारा सर ऊंचा रखते हैं। तदर्थ समाज परिवार आदि सभी के हर सदस्य का पावन कर्तव्य है कि सामाजिक नियमों में पूर्ण आस्था रखे। व्यवस्था यानी मर्यादा, सीमा, अनुशासन ताकि हम जिम्मेदारी उठा सके अपने कर्तव्य निभा सके । आचार्य तुलसी कहा करते थे- सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा । इसलिए व्यवस्था हमारे स्व-अनुशासन और समज के संगठन-अनुशासन के लिए आवश्यक है। व्यवस्था से ही समाज को नैतिक बल मिलता है।

प्रदीप छाजेड़
(बोरावड़)
9993876631

हज यात्रा पर रवाना होने से पूर्व अख्तर खान अकेला का स्वागत, मुबारकबाद

कोटा हजयात्रियों की पहली उड़ान 20 अप्रेल को जयपुर से होगी जिसमें कोटा के एडवोकेट अख्तर खान अकेला और उनका परिवार हज यात्रा पर रवाना होंगे । हज यात्रा पर रवाना होने से पूर्व उज्जैन के जज्बा सोशल फाउंडेशन एवं गांधीनगर के समरस संस्थान साहित्य सृजन भारत की ओर से अख्तर खान अकेला का स्वागत करते हुए उनके परिवार सहित सभी हज यात्रियों को मुबारकबाद देते हुए देश की खुशहाली, तरक़्क़ी , एकता , अखंडता और सद्भाव के लिए सभी हज यात्रियों से दुआएं मांगने की अपील की है ।

समरस संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी डॉ. प्रभात कुमार सिंघल , उज्जैन की समाजसेवी संस्था , जज्बा सोशल फाउंडेशन के इंजीनियर सरफराज कुरैशी और उनकी टीम ने सभी को मुबारकबाद देते हुए यात्रा की सफलता की कामना की।

कोटा से इस बार एडवोकेट अख्तर खान अकेला , उनकी पत्नी श्रीमती रिज़वाना अख्तर लेक्चरर , बिटिया सदफ अख्तर , मेडिको लीगल इमरान खान , मज़हर जहां , विख्यात शायर चाँद शेरी , डॉ. परवेज़, डॉक्टर इमरान, अब्दुल हलीम आयना , कलाम खान , पेशनर समाज के प्रदेश अध्यक्ष मन्नान खान , अफ़ज़ल अंसारी , सहित कई अन्य लोग हज यात्रा पर जा रहे हैं । एडवोकेट अख्तर खान अकेला की पहली फ्लाइट 20 अप्रेल की होने वे 19 अप्रेल को परिवार सहित जयपुर के लिए रवाना होंगे। कोटा जिला हज कमेटी प्रबंधन समिति के चेयरमेन सूफी जहीर ने बताया कि , राजस्थान से इस बार साढ़े तीन हज़ार से ज्यादा हज यात्री , मक्के , मदीना जाएंगे । कोटा से इस पवित्र यात्रा पर तीन सौ से भी ज्यादा हज यात्री जा रहे हैं । राजस्थान के हाजियों की पहली फ्लाइट जयपुर सांगानेर एयरपोर्ट से 20 अप्रेल शाम साढ़े आठ बजे मदीने के लिए रवाना होगी । सूफी जहीर ने बताया कि कोटा में हज यात्रियों की सुविधा के लिए टीकाकरण शिविर , चिकित्सा जांच और प्रशिक्षण शिविर राजस्थान सरकार के सहयोग से पहले ही सम्पन्न किया चुका है । उन्होंने कहा की किसी भी हज यात्री को किसी तरह का कोई कन्फ्यूजन हो तो वह पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

हज यात्रा में जाने वालों के लिए इस बार कुछ नियमों में बदलाव हुआ है । महिला और पुरुष को अलग-अलग कमरों में ठहराया जाएंगा जबकि इस बार मक्के और मदीने में सुरक्षा की दृष्टि से कोई भी यात्री खुद का खाना नहीं बना सकेगा हज यात्रियों को खुद अपने स्तर पर ही , इंडियन वेंडर्स या फिर होटलों पर ही अपना खाने नाश्ते का इंतजाम करना होगा । एक हज यात्री अपने साथ दो अलग - अलग सूट केस में बीस - बीस किलो से ज्यादा वज़न नहीं ले जा सकेगा । सात आठ किलो वज़न प्लेन में लेकर बैठने वाले बेग में रखा जा सकेगा ।